Pro

Chapter 31

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

דִּבְרֵי	לְמוּאֵל	מֶלֶךְ	מַשָּׂא	אֲשֶׁר־	יִסְּרַתּוּ	אִמּוֹ׃
वचन	लमूएल	राजा-के	भारी-वचन	जो-	अनुशासित-किया-उसे	माता-उसकी।
H1697	H3927	H4428			H3256	H0517

> ये सूक्तियाँ राजा लमूएल की, जिन्हें उसे उसकी माता ने सिखाया था।

2

מַה־	בְּרִי	וּמַה־	בַּר־	בִּטְנִי	וּמֶה	בַּר־	נְדָרָי׃
क्या-	बेटा-मेरे	और-क्या-	बेटे-	गर्भ-मेरे	और-क्या	बेटे-	मन्नतों-मेरी?
H4100	H1248	H4100	H1248	H0990	H4100	H1248	H5088

> तू मेरा पुत्र है वह पुत्र जो मुझ को प्यारा है। जिसके पाने को मैंने मन्नत मानी थी।

3

אַל־	תִּתֵּן	לַנָּשִׁים	חֵילֶךָ	וּדְרָכֶיךָ	לַמְחוֹת	מְלָכִין׃
मत-	दे	स्त्रियों-को	शक्ति-अपनी	और-मार्गों-अपने	नाश-करने-वालियों-को	राजाओं-के।
H0408	H5414	H0802	H2428	H1870		H4428

> तू व्यर्थ अपनी शक्ति स्त्रियों पर मत व्यय करो स्त्री ही राजाओं का विनाश करती हैं। इसलिये तू उन पर अपना क्षय मत कर।

4

אַל	לַמְלָכִים	לְמוֹאֵל	אַל	לַמְלָכִים	שְׁתוֹ־	יָיִן	וּלְרוֹזְנִים	[או]	(אֵי)	שֵׁכָר׃
नहीं	राजाओं-के-लिए	लमूएल	नहीं	राजाओं-के-लिए	पीना-	दाखरस	और-हाकिमों-के-लिए	[कहाँ]	(कहाँ)	मदिरा?
H0408	H4428	H3927	H0408	H4428	H8354	H3196	H7336		H0335	H7941

> हे लमूएल! राजा को मधुपान शोभा नहीं देता, और न ही यह कि शासक को यवसुरा ललचाये।

5

פֶּן־	יִשְׁתֶּה	וְיִשְׁכַּח	מְחֻקָּק	וִישַׁנֶּה	דִּין	כָּל־	בְּנֵי־	עֹנִי׃
कहीं-	पीए	और-भूल-जाए	विधि	और-बदल-दे	न्याय	सब-	बेटों-	दुःखीं-का।
H6435	H8354	H7911	H2710		H1779	H3605		H6040

> नहीं तो, वे मदिरा का बहुत अधिक पान करके, विधान की व्यवस्था को भूल जायेगें और वे सारे दीन दलितों के अधिकारों को छीन लेंगे।

6

תְּנוּ־	שֵׁכָר	לְאוֹבֵד	וְיַיִן	לְמָרֵי	נָפֶשׁ׃
दो-	मदिरा	नाश-होते-को	और-दाखरस	कड़वे-	प्राण।
H5414	H7941	H0006	H3196	H4751	H5315

> वे जो मिटे जा रहे हैं उन्हें यवसुरा, मदिरा उनको दे जिन पर दारूण दुःख पड़ा हो।

7

יִשְׁתֶּה	וְיִשְׁכַּח	רִישׁוֹ	וַעֲמָלוֹ	לֹא	יִזְכָּר־	עוֹד׃
पीए	और-भूल-जाए	गरीबी-अपनी	और-कष्ट-अपना	नहीं	याद-करे-	फिर।
H8354	H7911		H5999	H3808	H2142	H5750

> उनको पीने दे और उन्हें उनके अभावों को भूलने दे। उनका वह दारूण दुःख उन्हें नहीं याद रहे।

8

פְּתַח־	פִּיךָ	לְאִלֵּם	אֶל־	דִּין	כָּל־	בְּנֵי	חֲלוֹף׃
खोल-	मुँह-अपना	गूँगे-के-लिए	पास-	न्याय	सब-	बेटों	गुज़रने-वालों-का।
	H6310	H0483	H0413	H1779	H3605		H2475

> तू बोल उनके लिये जो कभी भी अपने लिये बोल नहीं पाते हैं; और उन सब के, अधिकारों के लिये बोल जो अभागे हैं।

9							
פְּתַח־	פִּיךָ	שְׁפָט־	צֶדֶק	וְדִין	עָנִי	וְאֶבְיוֹן׃	פ
खोल–	मुँह–अपना	न्याय–कर–	धार्मिकता–से	और–न्याय–कर	गरीब	और–दीन–का।	—
	H6310	H8199	H6664	H1777	H6041	H0034	

> तू डट करके खड़ा रह उन बातों के हेतू जिनको तू जानता है कि वे उचित, न्यायपूर्ण, और बिना पक्ष—पात के सबका न्याय कर। तू गरीब जन के अधिकारों की रक्षा कर और उन लोगों के जिनको तेरी अपेक्षा हो।

10						
אֵשֶׁת־	חַיִל	מִי	יִמְצָא	וְרָחֹק	מִפְּנִינִים	מִכְרָהּ׃
स्त्री–	योग्य–की	कौन	पाएगा?	और–दूर	मोतियों–से	मूल्य–उसका।
H0802	H2428	H4310	H4672	H7350	H6443	H4377

> गुणवंती पत्नी कौन पा सकता है वह जो मणि—मणिकों से कही अधिक मूल्यवान।

11						
בָּטַח	בָּהּ	לֵב	בַּעְלָהּ	וְשָׁלָל	לֹא	יֶחְסָר׃
भरोसा–करता	उस–पर	हृदय	पति–उसका	और–लूट	नहीं	घटेगी।
H0982			H1167	H7998	H3808	H2637

> जिसका पति उसका विश्वास कर सकता है। वह तो कभी भी गरीब नहीं होगा।

12						
גְּמָלַתְהוּ	טוֹב	וְלֹא־	רָע	כֹּל	יְמֵי	חַיֶּיהָ׃
बदला–देती–उसे	अच्छा	और–नहीं–	बुरा	सब–	दिनों	जीवन–उसके।
H1580		H3808		H3605	H3117	

> सद्पत्नी पति के संग उत्तम व्यवहार करती। अपने जीवन भर वह उसके लिये कभी विपत्ति नहीं उपजाती।

13					
דָּרְשָׁה	צֶמֶר	וּפִשְׁתִּים	וַתַּעַשׂ	בְּחֵפֶץ	כַּפֶּיהָ׃
खोजती	ऊन	और–सन	और–काम–करती	इच्छा–से	हाथों–अपने।
H1875	H6785	H6593		H2656	H3709

> वह सदा ऊनी और सूती कपड़े बुनाने में व्यस्त रहती।

14					
הָיְתָה	כָּאֳנִיּוֹת	סוֹחֵר	מִמֶּרְחָק	תָּבִיא	לַחְמָהּ׃
होती	जैसे–जहाज़	व्यापारी–के	दूर–से	लाती	रोटी–अपनी।
H1961	H0591	H5503	H4801	H0935	H3899

> वह जलयान जो दूर देश से आता है वह हर कहीं से घर पर भोज्य वस्तु लाती।

15							
וַתָּקָם	בְּעוֹד	לַיְלָה	וַתִּתֵּן	טֶרֶף	לְבֵיתָהּ	וְחֹק	לְנַעֲרֹתֶיהָ׃
और–उठती	अभी–	रात	और–देती	भोजन	घर–अपने–को	और–भाग	दासियों–अपनी–को।
	H5750	H3915	H5414	H2964		H2706	H5291

> तड़के उठाकर वह भोजन पकाती है। अपने परिवार का और दासियों का भाग उनको देती है।

16							
זָמְמָה	שָׂדֶה	וַתִּקָּחֵהוּ	מִפְּרִי	כַפֶּיהָ	[נטע]	(נָטְעָה)	כָּרֶם׃
सोचती	खेत–का	और–लेती–उसे	फल–से	हाथों–अपने	[लगाती]	(लगाती)	दाख–बारी।
H2161		H3947	H6529	H3709	H5193	H5193	H3754

> वह देखकर एवं परख कर खेत मोल लेती है जोड़े धन से वह दाख की बारी लगाती है।

17				
חָגְרָה	בְעוֹז	מָתְנֶיהָ	וַתְּאַמֵּץ	זְרוֹעֹתֶיהָ׃
बाँधती	शक्ति–से	कमर–अपनी	और–मज़बूत–करती	भुजाओं–अपनी।
H2296	H5797	H4975	H0553	H2220

> वह बड़ा श्रम करती है। वह अपने सभी काम करने को समर्थ है।

18								
טָעֲמָה	כִּי־	טוֹב	סַחְרָהּ	לֹא־	יִכְבֶּה	[בליל]	(בַלַּיְלָה)	נֵרָהּ׃
चखती	कि–	अच्छा	व्यापार–उसका	नहीं–	बुझता	[रात–में]	(रात–में)	दीपक–उसका।
H2938			H5504	H3808	H3518	H3915	H3915	

> जब भी वह अपनी बनायी वस्तु बेचती है, तो लाभ ही कमाती है। वह देर रात तक काम करती है।

19						
	יָדֶיהָ	שִׁלְּחָה	בַכִּישׁוֹר	וְכַפֶּיהָ	תָּמְכוּ	פָלֶךְ׃
	हाथ-अपने	बढ़ाती	तकली-पर	और-हथेलियाँ-अपनी	थामतीं	तकला।
	H3027	H7971	H3601	H3709	H8551	H6418

वह सूत कातती और निज वस्तु बुनती है।

20						
	כַּפָּהּ	פָּרְשָׂה	לֶעָנִי	וְיָדֶיהָ	שִׁלְּחָה	לָאֶבְיוֹן׃
	हथेली-अपनी	फैलाती	गरीब-के-लिए	और-हाथ-अपने	बढ़ाती	दीन-के-लिए।
	H3709	H6566	H6041	H3027	H7971	H0034

वह सदा ही दीन—दुःखी को दान देती है, और अभाव ग्रस्त जन की सहायता करती है।

21									
	לֹא־	תִירָא	לְבֵיתָהּ	מִשָּׁלֶג	כִּי	כָל־	בֵּיתָהּ	לָבֻשׁ	שָׁנִים׃
	नहीं-	डरती	घर-अपने-के-लिए	बर्फ-से	क्योंकि	सब-	घर-उसके	पहने	लाल।
	H3808	H3372		H7950		H3605		H3847	H8144

जब शीत पड़ती तो वह अपने परिवार हेतु चिंतित नहीं होती है। क्योंकि उसने सभी को उत्तम गर्म वस्त्र दे रख है।

22						
	מַרְבַדִּים	עָשְׂתָה־	לָּהּ	שֵׁשׁ	וְאַרְגָּמָן	לְבוּשָׁהּ׃
	गद्दे	बनाती-	अपने-लिए	सन	और-बैंगनी	पोशाक-उसकी।
	H4765				H0713	H3830

वह चादर बनाती है और गद्दी पर फैलाती है। वह सन से बने कपड़े पहनती है।

23							
	נוֹדָע	בַּשְּׁעָרִים	בַּעְלָהּ	בְּשִׁבְתּוֹ	עִם־	זִקְנֵי־	אָרֶץ׃
	जाना-जाता	फाटकों-में	पति-उसका	बैठने-में-उसके	के-साथ-	बुजुर्गों-	देश-के।
	H3045	H8179	H1167	H3427		H2205	H0776

लोग उसके पति का आदर करते हैं वह स्थान पाता है नगर प्रमुखों के बीच।

24						
	סָדִין	עָשְׂתָה	וַתִּמְכֹּר	וַחֲגוֹר	נָתְנָה	לַכְּנַעֲנִי׃
	चादर	बनाती	और-बेचती	और-पेटी	देती	व्यापारी-को।
	H5466		H4376	H2289	H5414	

वह अति उत्तम व्यापारी बनती है। वह वस्त्रों और कमरबंदों को बनाकर के उन्हें व्यापारी लोगों को बेचती है।

25						
	עֹז־	וְהָדָר	לְבוּשָׁהּ	וַתִּשְׂחַק	לְיוֹם	אַחֲרוֹן׃
	शक्ति-	और-गौरव	पोशाक-उसकी	और-हँसती	दिन-पर-	आखिरी।
	H5797	H1926	H3830	H7832	H3117	H0314

वह शक्तिशाली है, और लोग उसको मान देते हैं।

26							
	פִּיהָ	פָּתְחָה	בְחָכְמָה	וְתוֹרַת־	חֶסֶד	עַל־	לְשׁוֹנָהּ׃
	मुँह-अपना	खोलती	बुद्धि-में	और-व्यवस्था-	कृपा-की	पर-	जीभ-उसकी।
	H6310		H2451	H8451			H3956

जब वह बोलती है, वह विवेकपूर्ण रहती है। उसकी जीभ पर उत्तम शिक्षायें सदा रहती है।

27							
	צוֹפִיָּה	הֲלִיכוֹת	בֵּיתָהּ	וְלֶחֶם	עַצְלוּת	לֹא	תֹאכֵל׃
	निगरानी-करती	चाल-ढाल	घर-अपने-की	और-रोटी	आलस्य-की	नहीं	खाती।
	H6822	H1979		H3899	H6104	H3808	H0398

वह कभी भी आलस नहीं करती है और अपने घर बार का ध्यान रखती है।

28					
	קָמוּ	בָנֶיהָ	וַיְאַשְּׁרוּהָ	בַּעְלָהּ	וַיְהַלְלָהּ׃
	उठते	बेटे-उसके	और-धन्य-कहते-उसे	पति-उसका	और-स्तुति-करता-उसकी।
			H0833	H1167	

उसके बच्चे खड़े होते और उसे आदर देते हैं। उसका पति उसकी प्रशंसा करता है।

29 רַבּוֹת בָּנוֹת עָשׂוּ חָיִל וְאַתְּ עָלִית עַל־כֻּלָּנָה׃
बहुत बेटियाँ करतीं योग्यता और-तू चढ़ी पर- सब-से।
H3605 H5927 H2428 H1323

उसका पति कहता है, “बहुत सी स्त्रियाँ होती हैं। किन्तु उन सब में तू ही सर्वोत्तम अच्छी पत्नी है।”

30 שֶׁקֶר הַחֵן וְהֶבֶל הַיֹּפִי אִשָּׁה יִרְאַת־יְהוָה הִיא תִתְהַלָּל׃
झूठ लावण्य और-व्यर्थ सुन्दरता स्त्री डरने-वाली- यहोवा-से वह स्तुति-पाती।
H8267 H2580 H1892 H3308 H0802 H3068 H1931

मिथ्या आकर्षण और सुन्दरता दो पल की है, किन्तु वह स्त्री जिसे यहोवा का भय है, प्रशंसा पायेगी।

31 תְּנוּ־לָהּ מִפְּרִי יָדֶיהָ וִיהַלְלוּהָ בַשְּׁעָרִים מַעֲשֶׂיהָ׃
दो- उसे फल-से हाथों-उसके और-स्तुति-करें-उसकी फाटकों-में कार्य-उसके।
H5414 H6529 H3027 H8179 H4639

उसे वह प्रतिफल मिलना चाहिये जिसके वह योग्य है, और जो काम उसने किये हैं, उसके लिये चाहिये कि सारे लोग के बीच में उसकी प्रशंसा करें।